RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

ग्रामशी : एक क्रान्तिकारी विचारक

डॉ0 अवधेश कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्य कन्या डिग्री कालेज, प्रयागराज, उ0प्र0, भारत।

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20February 2019

Keywords
एन्टोनियों ग्रामशी, मार्क्सवादी, पूँजीवादी, सोवियत संघ एवं लोकतंत्र।

ABSTRACT

*एन्टोनियों ग्रामशी इटली का एक मार्क्सवादी विचारक था। इन्होंने इटली के संदर्भ में मार्क्सवादी विचार को नयी दिशा दी। ग्रामशी की प्रमुख रचना **'प्रिजन नोटबुक'** है। जिसकी रचना ग्रामसी ने जेल में रहकर की थी। सम्भव था कि यदि वह जेल से बाहर होता तो ये रचना ही न कर पाता, क्योंकि यह कठिन रचना है। ग्रामशी का महत्व इसमें निहित है कि उसने इसे स्पष्ट करने की कोशिश की कि 40 के दशक में यूरोप के देशों में मार्क्सवादी क्रान्ति क्यों असफल हुई। साथ–ही–साथ उसने उन उपायों पर विचार किया जिनके द्वारा इन देशों में सफलतापूर्वक क्रान्ति की जा सकती है। उसने इस सिद्धान्त की स्थापना की कि जिन देशों में पूँजीवादी व्यवस्था जितनी अधिक विकसित होती है उन देशों में उसकी जड़े उतनी ही गहरी होती है। अतः उन देशों में क्रान्ति उतनी ही कड़ी होती है। किन्तु जिन देशों में पूँजीवादी व्यवस्था अधिक विकसित नहीं हो पायी है। उन देशों में (पूँजीवाद) सरलतापूर्वक क्रान्ति की जा सकती है क्योंकि सोवियत संघ में पूँजीवादी व्यवस्था अधिक विकसित नहीं हो पायी थी इसलिए वहाँ मार्क्सवादी क्रान्ति सफल हुई। पश्चिमी यूरोप के देशों में पूँजीवादी व्यवस्था अधिक विकसित थी इसलिए इन देशों में मार्क्सवादी क्रान्ति को सफलता नहीं मिल सकी।*

ग्रामशी ने इस प्रश्न को उठाया है कि कोई शासन किस प्रकार सफल होता है। उसके अनुसार इसकी सफलता में शक्ति का स्थान महत्वपूर्ण है लेकिन शक्ति ही काफी नहीं है। उसके साथ–ही–साथ विचारों का स्थान भी महत्वपूर्ण होता है अतः सभी शासक अपने विचारों को विकसित करने की कोशिश करते हैं। वे अपने सिद्धान्त की स्थापना करते हैं और इसकी कोशिश करते है कि इस सिद्धान्त को वहाँ के सभी लोग अपने सिद्धान्त के रूप में स्वीकार कर ले। उसके अनुसार जिस अंश तक उस राज्य के लोग शासक के सिद्धान्त को अपने सिद्धान्त के रूप में मान लेते हैं, उस अंश तक वहाँ का शासन सफल होता है। ग्रामशी अपने विचार को प्रधानता का सिद्धान्त (थियरी ऑफ हेजिमनी) कहते हैं।

कोलाकावस्की के अनुसार ''यह सांस्कृतिक उपागम के द्वारा मानव मस्तिष्क पर नियंत्रण स्थापित करने का सिद्धान्त है।'' शासक वर्ग अपने विचारों के द्वारा शासित वर्ग के मस्तिष्क को प्रभावित करने की कोशिश करता है। उसके मस्तिष्क पर अपने सिद्धान्त द्वारा नियंत्रण स्थापित करता है। अपने इस सिद्धान्त में ग्रामशी ने विचारों की महत्ता पर बल दिया है। मार्क्स के अनुसार विचारों का स्थान 'सुपरस्ट्रक्चर' में है मूल संरचना में नहीं। मार्क्स के अनुसार आधार में आर्थिक सम्बन्ध होते है, आर्थिक सम्बन्ध ही अन्य सभी तत्वों को प्रभावित करते है। ग्रामशी ने आर्थिक सम्बन्धों की महत्ता को माना किन्तु उसके अनुसार विचारों का स्थान भी महत्वपूर्ण होता है क्योंकि उसने विचारों की महत्ता पर बल दिया, इसलिए उसे **'अधिरचना'** का विचारक कहा है। उसके अनुसार शासक वर्ग न केवल अपने विचारों की स्थापना करता है वरन् वह इसकी कोशिश करता है कि शासित वर्ग इसे अपने सिद्धान्त के रूप में स्वीकार कर ले। इसके लिए वह विभिन्न प्रकार के साधनों का उपयोग करता है। शासक वर्ग जिस सिद्धान्त को मानता है, स्कूल व कॉलेज में उसी सिद्धान्त के बारें में शिक्षा दी जाती है। देश के समाचार पत्रों में उसी सिद्धान्त का समर्थन होता है। वहाँ के धार्मिक संस्थाएँ तथा सांस्कृतिक संगठन उन्हीं सिद्धान्तों के अनुरूप कार्य करते हैं। वहाँ की व्यवस्थापिका उन्हीं विचारों के अनुरूप कानून बनाती है। नौकरशाही उन्हीं विचारों के अनुरूप शासन का संचालन करती है। कार्यपालिका इन्हीं विचारों के अनुरूप कार्य करती है तथा न्यायपालिका इन्हें अपने निर्णय का आधार बनाती है।

अतः व्यक्ति जन्म से ही इन सिद्धान्तों के बीच पलकर बड़ा होता है। बाद में इन सिद्धान्तों को ही अपने सिद्धान्तों के रूप में मान लेता है। उसके अनुसार यदि किसी देश में क्रान्ति को सफल होना है तब यह आवश्यक है कि इन स्थापित विचारों के स्थान पर नवीन विचारों की वास्तविकता की स्थापना की जाये और इन विचारों का उद्देश्य स्थापित विचारों की वास्तविकताओं को स्पष्ट करना होना चाहिए अर्थात् इसे सिद्ध करना होना चाहिए कि ये विचार वास्तव में शासित वर्ग के हित में नहीं है।

अतः यदि मार्क्सवादी क्रान्ति को सफल बनाना है तब इसके नए विचार जाए कि मार्क्स के सिद्धान्तों पर आधारित

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विचार की स्थापना हो तथा इनके आधार पर पूँजीवादी विचारों की आलोचना की जाए तब किसी देश की जनता की मार्क्सवादी विचारों को स्वीकार कर लेगी तब पूँजीवादी शासन कमजोर होगा। मार्क्स के विचारों पर आधारित क्रान्ति की सफलता सम्भव हो सकेगी क्योंकि इस तरह के प्रयास नहीं हुए इसलिए पश्चिमी यूरोप के देशों में मार्क्सवादी क्रान्ति सफल नहीं हो पायी थी।

ग्रामशी पर आदर्शवाद का प्रभाव पड़ा है ऐसा कुछ विद्वानों का मत है। उनका आरोप है कि ग्रामशी ने 'सुपर स्ट्रक्चर' पर जोर दिया और मार्क्सवाद को उलट–पुलट दिया। ग्रामसी के मुख्य राजनीतिक विचार निम्नलिखित हैं–

1. बुद्धिजीवी वर्ग का सिद्धान्त।
2. दल सम्बन्धी विचार तथा
3. क्रान्ति पर विचार।

बुद्धिजीवी वर्ग के सिद्धान्त में आधार एवं अधिरचना के सिद्धान्त के आधार पर मार्क्स के अनुसार आधार में आर्थिक सम्बन्ध है। आर्थिक सम्बन्धों से ही समाज के अन्य सभी सम्बन्ध निश्चित होते हैं। एक बार मार्क्स से प्रश्न पूछा गया कि क्या राजनीतिक सम्बन्ध से आर्थिक सम्बन्ध प्रभावित नहीं हैं? मार्क्स इसका उचित उत्तर नहीं दे पाया। इतिहास के विकास में राजनीतिक विचारों का महत्वपूर्ण स्थान है ऐसा लेनिन ने सोवियत संघ के संदर्भ में माना है। माओं ने भी इसे चीन के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना। ग्रामशी ने पहले पहल इस पर बल दिया कि कोई भी शासन शक्ति से सफल नहीं होता बल्कि शासन को सिद्धान्त से सफलता मिलती है।

राज्य के बढ़े हुए स्वरूप में लेनिन तथा माओ ने शक्ति को महत्वपूर्ण माना। किन्तु ग्रामशी के अनुसार क्रान्ति की सफलता के लिए विचार प्रधान है। यही कारण था कि 'पश्चिमी यूरोप के देशों में क्रान्ति सफल नहीं हुई'। इसलिए ग्रामशी ने विचारों के माध्यम से क्रान्ति लाने पर बल दिए। ग्रामशी ने विचार आधारित अधिरचना का सिद्धान्त दिया। यदि क्रान्ति के लिए विचार आवश्यक है तो ये कहाँ से आयेगे? विचारों का जन्म व विकास बौद्धिक वर्ग से होता है। इस दृष्टि से ग्रामशी ने क्रान्ति की सफलता के लिए बौद्धिक वर्ग की महत्ता पर बल दिए क्योंकि यही वर्ग विचारों का स्रोत है। यदि बौद्धिक वर्ग सफल नहीं है तो क्रान्ति सफल नहीं होगी। ग्रामशी के अनुसार बौद्धिक वर्ग दो प्रकार के होते हैं जिसमें समाज के निश्चित वर्ग से जुड़ा बुद्धिजीवी इसे ग्रामशी ने सावयवी बुद्धिजीवी वर्ग कहा है तथा वह बौद्धिक वर्ग जो समाज के किसी निश्चित वर्ग से जुड़ा नहीं है। ग्रामशी के अनुसार ये परम्परागत बुद्धिजीवी है।

बुद्धिजीवी प्रतिबद्ध है तथा उसका उद्देश्य समाज के निश्चित वर्ग के हित को आगे बढ़ाना है, वे सावयवी बुद्धिजीवी है। अतः इनके विचार का आधार समाज के एक वर्ग का हित साधन है। समाज में ऐसे भी लोग हैं जो दोनों वर्ग से निरपेक्ष है, उनके विचार हैं किन्तु उनका उद्देश्य, समाज के किसी वर्ग का हित साधन नहीं है। ग्रामशी के अनुसार इसकी कोशिश हो कि जो परम्परागत बुद्धिजीवी हैं उन्हें सावयवी बुद्धिजीवी के रूप में बदला जाय। जब तक वे सावयवी बुद्धिजीवी नहीं होगें तब तक वे किसी एक वर्ग के हित को आगे नहीं बढ़ा पायेंगे तथा वैचारिक क्रान्ति नहीं हो पायेगी। ग्रामशी ने अपने विचार में परम्परागत बुद्धिजीवी को सावयवी बुद्धिजीवों में बदलने का विचार दिया। उसमें सावयवी बुद्धिजीवी के विचार को आगे बढ़ाया था। उसके अनुसार सावयवी बुद्धिजीवी वर्ग का उद्देश्य एक निश्चित वर्ग का हित साधन है यही उद्देश्य इस वर्ग के दलगत है।

दल सम्बन्धी विचारों में ग्रामशी के अनुसार सावयवी बुद्धिजीवी दल के नेतृत्व में कोई अन्तर नहीं है। ग्रामशी ने सावयवी बुद्धिजीवी को दल का नेतृत्व करने वाले बुद्धिजीवी के रूप में माना है। सर्वहारा वर्ग के दल का यह कर्त्तव्य है कि वह इन विचारों की स्थापना करें जिनका सम्बन्ध सर्वहारा वर्ग से है क्योंकि ऐसा प्रयास केवल एक व्यक्ति का नहीं है वरन् दल के पूर्ण नेतृत्व का है। अतः उसके अनुसार इसका स्वरूप ही सामूहिक होता है। अतः सावयवी बुद्धिजीवी से उसका मतलब दल के नेतृत्व से है। सभी का उद्देश्य एक है वह ये हैं कि किस प्रकार सर्वहारा के हित को प्राप्त करने हेतु विचार स्थापित किया जाए।

अतः ग्रामशी के अनुसार बुद्धिजीवी का सम्बन्ध दल से तथा नेतृत्व से है। अपने दल सम्बन्धी विचार में उसने माना कि दल की सफलता हेतु नेतृत्व आवश्यक है। नेतृत्व के अभाव में कोई भी दल सफल नहीं हो सकता। यहाँ ग्रामशी लेनिन से प्रभावित है। उसके अनुसार यह दल के नेतृत्व का दायित्व है कि वह वर्ग हित को पाने के लिए उचित प्रकार के विचारों को स्थापित कर सिद्धान्त बनाये तथा इस सिद्धान्त के आधार पर वर्ग चेतना को विकसित करे। लेकिन उसके अनुसार केवल नेतृत्व से ही दल की सफलता निश्चित नहीं है। उसके साथ–ही–साथ यह भी जरूरी है कि उसके अधिक–से–अधिक समर्थक हो। अतः अपने दल के विचार में ग्रामशी इटली की परिस्थितियों से प्रभावित था। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् इटली में फासीवादी आन्दोलन शीघ्रता से बढ़ रहा था। इसकी ये मुख्य विशेषता थी कि जनता का बहुसंख्यक भाग इसका समर्थक हो गया था। अतः ग्रामशी के अनुसार यदि इटली में फासीवाद को रोकना था एवं उसके जगह पर मार्क्सवाद की स्थापना करना था तथा मार्क्सवादी क्रान्ति की सफलता निश्चित करना था तब ये जरूरी था कि दल को अधिक लोगों का समर्थन मिले। अतः उसने दल के समर्थकों की संख्या पर भी बल दिया। उसने अपने इन विचारों को इटली के लियन्स नामक स्थान पर इटली के साम्यवादी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

दल की बैठक में रखा था। इसलिए इन्हें दल सम्बन्धी विचार 'लियन्स थीसिस' के नाम से जाना जाता।

ग्रामशी के दल सम्बन्धी विचारों पर ही उसके क्रान्ति सम्बन्धी विचार आधारित है। ग्रामशी ने लेनिन व माओ के इस मत को माना कि आदर्श समाज की स्थापना के लिए क्रान्ति आवश्यक है। क्रान्ति के द्वारा ही वर्ग समाज के स्थान पर वर्ग विहीन समाज की स्थापना कर सकते हैं। किन्तु उसके अनुसार मार्क्सवाद क्रान्ति की सफलता की कुछ जरूरी दशाएं हैं। इसके अभाव में क्रान्ति सफल नहीं होगी। इस दृष्टि से ग्रामशी ने अपने क्रान्ति सम्बन्धी विचार को दो भागों में बाँटा है–

1. विचारों के स्तर पर क्रान्ति तथा
2. सर्वहारा वर्ग की क्रान्ति।

ग्रामशी ने 'वार ऑफ पोजीशन' तथा 'वार ऑफ मूवमेंट' की बात कही। उसके अनुसार पहले का उद्देश्य समाज में स्थापित विचार की जगह पर नये विचार की स्थापना करना है। सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व का ये दायित्व है कि वह स्थापित पूँजीवादी विचारों का विरोध करें तथा इसकी जगह पर सर्वहारा वर्ग के विचारों की स्थापना करें। क्रान्ति के प्रथम चरण का उद्देश्य इन दो प्रकार के विचारों के मध्य संघर्ष से है। जब विचारों के स्तर पर सर्वहारा वर्ग का विचार सफल होगा, इसे जन समर्थन मिलेगा, इसके पश्चात ही सर्वहारा वर्ग की क्रान्ति सफल होगी। ग्रामशी के अनुसार पाश्चात्य यूरोप के देशों में सर्वहारा वर्ग की क्रान्ति इसलिए नहीं सफल हुई क्योंकि विचारों के स्तर पर इसने सफलता नहीं प्राप्त की थी। अतः इन देशों में क्रान्ति की सफलता हेतु उन्हें अपने विचार स्थापित कर इनकी श्रेष्ठता सिद्ध करनी चाहिए। इस दृष्टि से ग्रामशी ने मार्क्सवादी क्रान्ति की सफलता हेतु विचार की महत्ता पर बल दिया। मार्क्सवादी विचार के विकास में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। ग्रामशी ने इसे नवीन दिशा देने की कोशिश की। ग्रामशी ने इसे स्पष्ट किया कि विकसित पूँजीवादी देशों में मार्क्सवादी क्रान्ति क्यों असफल हुयी। इन देशों में क्रान्ति को फिर से सफल होने के उपाय बताए। सामान्यतः इसे स्वीकार करते हैं कि उसके इन विचारों का प्रभाव यूरोप के विभिन्न मार्क्सवादी विचारकों पर पड़ा था तथा इससे यूरोप का मार्क्सवाद प्रभावित हुआ था। 1920 के पास जब कन्सीलियर आन्दोलन आया तो ग्रामशी ने कहा कि पूँजीवादी व्यवस्था में शोषण को खत्म करने के लिए काउन्सिल की स्थापना हो। हर फैक्टरी वर्कशॉप में वर्कशॉप क्रू में बँटी होगी। हर किसी को प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होगा। परिषद के सदस्य कार्यकारी परिषद को चुनेगें। कार्यकारिणी के लोग राष्ट्रीय कार्यकारिणी को चुनेनें एवं राष्ट्रीयकारिणी शिक्षा समिति गठित करेगी।

शिक्षा समिति लोगों के मन में भी एजेंडा तथा विभिन्न कार्य करेगी। जब यह आन्दोलन फेल हो गया एवं वह मार्क्सवादी दल से जुड़ गया। 1920 में वह जेल गया एवं 'प्रिजन नोटबुक' लिखा। वह क्रान्ति, बौद्धिकता की बात करता है। ग्रामशी कहता है कि कम्यूनिस्ट में सारे लोग बुद्धिजीवी हैं। क्योंकि सारे लोग बुद्धिजीवी हैं। वह दो भागों में बताता है–

1. **परम्परागत बुद्धिजीवी–** ये किसी क्लास से जुड़े नहीं होते। ये वर्ग के हित में प्रभावित नहीं होते। जब क्रान्ति आती है तब भी वे संघर्ष करते हैं। ये पूँजीवाद की समाप्ति के बाद काम करते रहते हैं। जो किसी पार्टी में काम नहीं करते। किसी वर्ग से जुड़े नही हो यह व्यवस्था बदलने के बाद भी चलती रहती है। कवि की कविता हमेशा चलती है।
2. **सावयवी बौद्धिकता–** ये किसी वर्ग के हित के प्रतिनिधित्व करता है पर उस वर्ग में चेतना भरता है। जब व्यवस्था आती है तो नये बौद्धिक लोग आते हैं। पूँजीवादी व्यवस्था में कुछ व्यक्ति पूँजीवाद को बढ़ाते हैं एवं साम्यवाद में ये खत्म हो जाते हैं। साम्यवादी बौद्धिक व्यवस्था के विषय में नयी बाते खोजते हैं ताकि व्यवस्था चलती रहती है। वर्ग से उलटफेर में से खत्म हो जाते हैं। इस बौद्धिक वर्ग का बड़ी भूमिका होती है। मार्क्स कहता है कि बदलाव कोई लायेगा नही। मूल में परिवर्तन से संरचना बदल जायेगा कोई कुछ करें या न करें। पूँजीवादी व्यवस्था की खुद की समस्या ही उसको खत्म कर देगी एवं साम्यवाद की स्थापना होगी। लेनिन ने कहा था कि एक बैगार्ड पार्टी होगी जो क्रान्ति लायेगी। एक विश्व व्यवस्था पर पूँजीवादी व्यवस्था का विरोध करेगी। पार्टी के नेता की भूमिका को भी बताया था।

ग्रामशी कहता है कि जो मार्क्स कहता है कि जो गलत चेतना है वह वर्ग चेतना में बदल जायेगी क्योंकि पूँजीपति लोगों के अन्दर विचार फैलाये रहता है कि सारी व्यवस्था सबके लिए हैं हर कोई अपना मानता है। मार्क्स सारी व्यवस्था को पूंजीपति की मानता है। सारी व्यवस्था शोषण की एजेंसी है। राज्य भी खत्म होना है। मजदूरों के अन्दर चेतना आयेगी एवं गलत चेतना खत्म हो जायेगी। यह मजदूर ही लायेगे। ग्रामशी मानता है कि चेतना स्वतः ही नही आ जायेगी। यह बुद्धिजीवी लायेगे। बौद्धिक लोग मुख्यतः प्रवाहक होंगे। शिक्षक बौद्धिक शोषण के खिलाफ आवाज उठायेगे। सारी व्यवस्था पलटने से पहले जो सैनिकों के दिमाग की लड़ाई है उनको बदलना पड़ेगा। पूँजीपति अपने आधिपत्य में शान्ति की बात करता है ताकि क्रान्ति न हो सके। आधिपत्य के खिलाफ विचारधाराओं को तोड़ना होगा। ट्रेड यूनियन, धर्म, शिक्षक, धार्मिक चर्च, आधिपत्य को स्थापित करते हैं। इस

RRIJM 2015, All Rights Reserved

आधिपत्य को तोड़ना होगा। यह लोगों को बताना होगा कि ये संरचनायें हितकारी नहीं वरन् खतरनाक है। इसमें प्रतिप्राधान्य फैलानी पड़ेगी। मजदूरों एवं क्रान्ति में भाग लेने वालों को बताना पड़ेगा कि आधिपत्य का विरोध करें। ग्रामशी क्रान्ति में बुद्धिजीवियों की भूमिका प्रमुख होगी। यह विचार आज भी प्रधान है। सारे नेता इसी आधार पर जनमत बनाती है। ट्रेड यूनियन, शिक्षण संस्थायें एवं विभिन्न संस्था से जनमत दल बनायी है। हर राजनीतिक दल उसको लागू करता है।

ग्रामशी कहता है कि जिस तरह की परिस्थिति में हम रहते हैं वह हमारी चेतना निर्धारित करती है जबकि मार्क्स कहता है कि हमारा रहन–सहन ही हमारी सोच को निर्धारित करती है। मनुष्य द्वितीयक हो जाता है। मानव चिन्तन को केन्द्र में ग्रामशी रखता है अतः वह मानववादी है।

1. युद्ध की स्थिति– जो स्थिति में पहले हैं उसको हटाकर दूसरी व्यवस्था लाना।
2. मानसिक युद्ध–जो सोच है उसमें परिवर्तन लाया जायेगा।

यह प्रतिप्राधान्य का सिद्धान्त जिसका प्रतिपादक ग्रामशी है। मार्क्स कहता है कि मजदूर संगठित होकर परिस्थितिवश क्रान्ति करके विजय प्राप्त करेगा। पूँजीवादी व्यवस्था खुद ही अपनी कमियों से खत्म हो जायेगी। ग्रामशी कहता है कि पहल कोई करेगा। वह बुद्धिजीवियों की भूमिका बताता है कि व्यवस्था को गलत धारणा है उसको पलट देना। अच्छा वकील होगा तब व्यक्ति मुकदमा जीत जायेगा। जबकि हम समझते हैं कि सारी व्यवस्था हमारी है। यह सांस्कृतिक रूप से ऐसा भर दिया गया है। लोगों का भ्रम सावयवी बुद्धिजीवी तोड़ेगा यही प्रक्रिया मानसिक युद्ध आयेगी। वह इसके प्रतिप्राधान्य कहता है। मार्क्सवादी विचारधारा को झूठी संरचना मानते हैं। पूँजीवादी व्यवस्था के हित में ही सारी व्यवस्था ही हैं यह विचारधारा गलत चेतना सब वर्कर लाभ में है। यह गलत विचार विचारधारा बनाये रखती है। यही जब वर्ग–चेतना (सर्वहारा) आयेगी कि उसका शोषण हो रहा है तब विचारधारा खुली होगी एवं वर्गीय चेतना में बदलना जरूरी है। ग्रामशी इसको स्पष्ट करता है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि ग्रामशी के विचार आज भी कितने प्रासंगिक हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. राबर्ट एम. डेनेटो एण्ड फ्रेडरिक जेक्सन; **ग्रामशी इन द वर्ल्ड,** डयूक यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 2020, ISBN-9781478008491 ।
2. एन्ने शोस्टॉक सैशन; **ग्रामशीज पॉलिटिक्स,** रूटलेज लाइब्रेरी प्रकाशन, 2019।
3. पेरी एंडरसन– **द एन्टीनॉमिज ऑफ एन्टोनिओं ग्रामशी,** न्यू लेफ्ट बुक्स प्रकाशन, 2020, ISBN-13.978.1.78663.373.6 ।
4. जोसेफ फ्रासींस– **पर्सपेक्टिवस ऑन ग्रामशी : पॉलिटिक्स कल्चर एण्ड सोशल थियरी,** रूटलेज प्रकाशन, इंग्लैण्ड, 2009, ISBN-978. 0.415.48527 ।
5. एंटोनिओ ग्रामशी : **सेलेक्शनस फ्राम द प्रिजन नोटबुक्स ऑफ एण्टोनिओं ग्रामशी,** 1971।
6. मार्क्स मैकनली : **एंटोनिओ ग्रामशी**, पालग्रेव मैकमिलन प्रकाशन, ISBN-978.1.349.55365 ।

RRIJM 2015, All Rights Reserved